

मीरा कैँ
मीराबार्द

पंद 1

हरि आप हरो जन री भीर ।
द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर ।
भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर ।
दासी मीरा! लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर ।।
दासी मीरा! लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर ।।

पद 1

हे भगवान श्रीकृष्ण! द्रौपदी, गजराज और भक्त के
समान मेरी भी रक्षा कीजिए ।



पद 2

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरधारी लाला म्हाने चाकर राखोजी ।
चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ नित उठ दरसण पास्यूँ ।
बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ ।
चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ, खरची ।
भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी ।



पद 2

भगवान आप मुझे अपनी चाकरी में रख लीजिए ।
आपके दर्शन, स्मरण और भाव— भक्ति की जागीर
मुझे मिल जायेगी ।



मोर मुगट पीताम्बर सौहे, गल वैजन्ती माला ।
बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला ।



ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी ।
साँवरिया रा दरसन पारखूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी ।
आधी रात प्रभु दरसन, दीज्यो जमनाजी रे तीरां ।
मीराँ रा प्रभु गिरमार नागर, हिवड़ो घणो अधीराँ ।



मीराबाई कृष्ण की कृपा प्राप्त करने के लिए आधी रात में भी यमुना नदी के किनारे जाकर दर्शन प्राप्त करने को तैयार हैं। उन्हें भगवान कृष्ण के दर्शन के बिना व्याकुलता रहती है।

